# नारी शक्ति के महानायक थे-प्रजापिता ब्रह्मा

'भारत माता की जय', 'वन्दे मातरम' तथा शास्त्रों में वर्णित 'यत्र नार्यस्तु पूज्यते रमन्ते तत्र देवता' केवल किताबों तक ही सीमित नहीं है बल्कि व्यवहार में भी ये सुवाक्य साकार हो रहे हैं। परन्तु सात दशक पूर्व प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के साकार संस्थापक प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने माताओं-बहनों को विश्व परिवर्तन के लिए केवल अग्रणी ही नहीं बनाया बल्कि संस्था की स्थापना की आधारशिला भी बनाया। सदियों से, पूरे विश्व में महिलाओं की दयनीय दशा होने के कारण ही मानवीय मूल्यों का पतन हुआ। प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ईश्वरीय शक्ति और नारी को शक्ति रूप में प्रतिस्थापित करते हुए नारी के अन्दर छिपी महान शक्ति का एहसास कराया। बाबा यह अच्छी तरह समझ गये थे कि जब तक नारियों का उद्धार नहीं होगा तब इस मायावी समाज का कायाकल्प मुश्किल है। परमात्म सत्ता और ईश्वरीय निर्देशन में प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने ईश्वरीय योजना के अनुरूप माताओं बहनों को सम्मान देकर आगे करते हुए आध्यात्मिक क्रान्ति का सूत्रपात किया।

धीरे-धीरे नारी की शक्ति का प्रकाश काली, दुर्गा, सरस्वती और लक्ष्मी के रूप में प्रख्यात होने लगा। माताओं-बहनों को आगे कर बाबा ने उन सभी पूर्वाग्रहों को तोड़ दिया जिनके आधार पर पुरूष प्रधान समाज में महिलाओं को नगण्य अथवा चारदिवारी की वस्तु समझा जाता था। माताओं-बहनों ने सृष्टि के सबसे कठिन-कार्य लोगों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन कर उन्हें देवी-देवता तुल्य बनाना उन्हें मानवता का पाठ पढ़ाने के लिए रूहानी सेना बन कमान संभाली। बाबा ने उनके मृदु स्वभाव को जानकर तथा उन्हें ज्ञान और अज्ञानता के भेद को समझाते हुए संस्था की कमान सौंपी। शक्ति स्वरूपा बनाने के लिए बाबा ने उनको शारीरिक भान से ऊपर उठाते हुए आत्मा का पाठ पक्का कराया। आत्मा में छिपे गुणों से अवगत कराया, आत्मा का पाठ पढ़ाते हुए उन्हें शक्ति स्वरूप बनकर कार्य करने की प्रेरणा दी। सन् 1936 में बाबा ने ओम मंडली नाम से संस्था का प्रारम्भिक गठन किया। जिसमें केवल माताय-बहनें ही थी। रूढ़िवादी समाज ने इसका पुरजोर विरोध किया। विरोध ने आंदोलन का रूप भी लिया। परन्तु परमात्मा शिव के द्वारा प्रारम्भ कार्य विश्व परिवर्तन की क्रान्ति में सम्मिलित माताओं-बहनों ने शक्ति रूप धारण करते हुए ब्रह्मा बाबा के निर्देशन में बुराइयों का कड़ाई से मुकाबला किया। जीत अन्ततः सत्य की हुई। परिवर्तन की बयार को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने सिद्ध कर दिया कि नारी नर्क का नहीं बल्कि स्वर्ग का द्वार है।

सन् 1876 में हैदराबाद-सिन्ध के धर्म परायण परिवार में जन्मे प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के बचपन का नाम दादा लेखराज था। वे श्रद्धा व भक्ति के प्रबल प्रर्याय थे। संसार में समस्त मनुष्यात्माओं का समान दर्जा उनके जेहन में सदैव गूंजता था। वे श्री नारायण के अनन्य भक्त थे परन्तु लक्ष्मी द्वारा विष्णु का पैर दबाना उन्हे बिल्कुल पसंद नहीं था। वे चित्र बनाने वालों को लक्ष्मी उन्हें समान दर्जा अथवा साथ में बैठे हुए बनाने की प्रेरणा देते थे। बाबा सदैव यही कहते थे कि आत्मा-आत्मा सभी आपस में समान है तो फिर असमानता क्यों। भारत पाकिस्तान विभाजन के बाद यह संस्था ईश्वरीय निर्देशन में राजस्थान के माउण्ट आबू में स्थित हुई। यही से नारी शक्ति की रूहानी सेना ने बाबा की देख-रेख में विश्व परिवर्तन की क्रान्ति का बिगुल फूंका।

दादा लेखराज के जीवन में अलौकिक परिवर्तन का क्षण तब आया जब उन्हें वाराणसी में मित्र के घर पुरानी दुनियां के महाविनाश का साक्षात्कार हुआ। उस समय इन महाविनाशक हथियारों का दूर-दूर तक नामोनिशान नहीं था। उसके पश्चात आने वाली सुख-शान्तिमय नयी दुनिया की स्थापना का भी साक्षात्कार हुआ। यह बात बाबा को समझ में नहीं आयी और वे दिन-रात इसके बारे में करते रहे। उन्होंने इसका श्रेय अपने गुरू को देते हुए उनसे अर्थ पूछा परन्तु उत्तर न मिलने के कारण समझ गये कि यह साक्षात ईश्वर का कमाल है। इसके बाद ही, उनके अपने घर पर, स्वयं जगत नियंता परमात्मा शिव ने उनके तन में प्रवेश कर उन्हें अपनी उपस्थिति का एहसास दिलाया और नयी दुनियां की स्थापना का दायित्व सौंपा। फिर दादा लेखराज को उनके पूर्व जन्मों का परिचय देते हुए उन्हें अतीत से अवगत कराया और प्रजापिता ब्रह्मा के नाम से नामकरण किया।

यहीं से विश्व परिवर्तन की महान प्रक्रिया का शुभारम्भ हुआ। धीरे-धीरे यह कारवां बढ़ते हुए शहर, गाँव, जिला, प्रदेश, देश और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पहुंच गया। धीरे-धीरे इसमें सभी वर्गों का विशाल समूह सम्मिलित होता गया और वैश्विक परिवर्तन की वृहद प्रक्रिया का रूप धारण किया। बाबा ने राजयोग में परमात्मा शिव की स्मृति को केन्द्रित किया क्योंकि यदि आत्मिक रूप से सशक्त बनना है तो यह ईश्वर के सान्निध्य से ही सम्भव है। बाबा ने एक ऐसी सेना तैयार की जो अपने आदर्श जीवन से पूरे विश्व में लोगों के लिए सुन्दर जीवन जीने और उदाहरणमूर्त्त बनने का सपना साकार कर रही है। बाबा प्रकृति और पर्यावरण की सतोप्रधानता के हिमायती थे। मानसिक प्रदूषण से मुक्ति के साथ-साथ प्राकृतिक प्रदूषण को भी दूर करने का सकारात्मक प्रयास करते रहे। बाबा, गहन तपस्या करते हुए सतोप्रधानता के करीब पहुंच गये।

मानवीय सेवाओं में तत्पर रहते हुए गहन तपस्या से सम्पूर्णता को प्राप्त करके बाब ने 18 जनवरी, 1969 को नश्वर शरीर का त्याग किया। आज भले ही बाबा हमारे बीच नहीं है परन्तु उनकी सूक्ष्म उपस्थिति आज भी लाखों आत्माओं के जीवन में अध्यात्म की ज्योति जलाने का महान कार्य कर रही है। बाबा ने 73 वर्ष पूर्व विश्व परिवर्तन का जो बीज बोया था वह अब वटवृक्ष का रूप धारण कर चुका है। लाखों लोग बाबा के पदचिन्हों पर चलते हुए अपना जीवन सुखी बनाते हुए स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन की प्रक्रिया में प्रयासरत है। अट्ठारह जनवरी को हम सभी अपने तन और मन से विश्व में शांति फैलाने का महान कार्य करें। यही ऐसी महान विभूति को सच्ची श्रद्धांजलि होगी। इस पावन अवसर पर ऐसे महापुरुष को शत् शत् नमन करते हैं।

ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स
www.bkvarta.com